प्र. आश्विन शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2020

ऋतु
शरद सूर्य
दक्षिणायन

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	18.09.20	6.11	18.19
अष्टमी	24.09.20	6.14	18.12
पूर्णिमा	01.10.20	6.18	18.04

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र संचार	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शुक्र	उत्तरा फा. हस्त	18.09.20	कन्या	पुरूषोत्तम मास प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन
द्वितीया तृतीया	शनि	चित्रा	19.09.20	तुला 14.43	सर्वार्थ सिद्धि योग 25.19 से 30.12 तक तृतीया तिथि का क्षय
चतुर्थी	रवि	स्वाती	20.09.20	तुला	–
पंचमी	सोम	विशाखा	21.09.20	वृश्चि. 15.19	सर्वार्थ सिद्धि योग 20.48 से 30.13 तक
षष्ठी	मंगल	अनुराधा	22.09.20	वृश्चिक	–
सप्तमी	बुध	ज्येष्ठा	23.09.20	धनु 18.24	रात दिन बराबर
अष्टमी	गुरू	मूल	24.09.20	धनु	–
नवमी	शुक्र	पूर्वाषाढ़	25.09.20	मकर 24.44	–
दशमी	शनि	उत्तराषाढ़	26.09.20	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 19.25 से 30.16 तक
एकादशी	रवि	श्रवण	27.09.20	मकर	कमला एकादशी व्रत
द्वादशी	सोम	घनिष्ठा	28.09.20	कुम्भ 9.43	पंचक प्रारम्भ 9.43 से, भगत सिंह जयंती
त्रयोदशी	मंगल	शतभिषा	29.09.20	कुम्भ	पंचक, भौम प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	बुध	पूर्वाभाद्र	30.09.20	मीन 20.37	पंचक
पूर्णिमा	गुरू	उत्तराभाद्र	01.10.20	मीन	पंचक, सत्यनारायण व्रत पूर्णिमा

अधिक मास - मलमास

जिस महीने में सूर्य संक्राति न हो वह महीना अधिक मास कहलाता है। लोक व्यहवार में इसे अधिक मास, मलमास और पुरूषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। जिस महीने में अधिक मास आता है उसमें 4 पक्ष होते है। प्रथम और चतुर्थ पक्ष शुद्ध महीने के होते है तथा द्वितीय और तृतीय पक्ष अधिक मास कहलाते है। अर्थात शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से प्रारंभ होकर कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक अधिक मास होता है। इस वर्ष अंग्रेजी तिथि के अनुसार 18.09.2020 से 16.10.2020 तक आश्विन मास अधिक मास के रूप में है।

अधिक मास में काम्यकर्म वर्जित है। इस महीने में फल की आशा को पूर्णतः त्यागकर केवल ईश्वर प्रीत्यर्थ व्रत, उपवास, तीर्थ स्नान, दान पूजन, कथा श्रवण आदि किये जाने चाहिए। इस मास में किये जाने वाले व्रत के विषय में भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है कि इसका फल दाता, भोक्ता और अधिष्ठाता - सब कुछ मै ही हूँ, इसलिए इसे पुरूपोत्तम मास भी कहा जाता है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)